PAPER VII(A)
PEDAGOGY OF SOCIAL SCIENCE(HISTORY AND CIVIC)

SEMESTER II

TOPIC :- SOURCE METHOD

DATE:- 23.7.2020

INDU SINHA
THE GRADUATE SCHOOL COLLEGE FOR WOMEN
(ASSISTANT PROFESSOR)
B.Ed DEPARTMENT

स्रोत का अर्थ

इतिहास अतीत की घटनाओं तथा तथ्यों का सत्यापित अध्ययन है। अतीत में जो घटनायें घटित हुई हैं या जो तथ्य रहे हैं, उनका पता लगाना एक कठिन कार्य है, क्योंकि जब ये घटनायें या तथ्य घटित हुए तब हम जीवित नहीं थे, इसलिए इनका सही अध्ययन करने के लिए हम कुछ ऐसे अवशेष, अभिलेख तथा अन्य ठोस प्रमाणों का सहारा लेकर ही सत्य की ओर अग्रसित होते हैं। वर्तमान में रहने वाला इतिहासकार इस बात की सही जानकारी कैसे करें कि शताब्दियों पूर्व इस विश्व में क्या घटित हुआ था। यह बात वह अपनी कल्पना, लोकोक्तियों या कहानियों के आधार पर तो कहने से रहा, क्योंकि इतिहास एक वैज्ञानिक विषय है, इसलिये अतीत की घटनाओं का वैज्ञानिक ढंग से तथा रूप में प्रस्तुत करना उसका कर्त्तव्य है। इसके लिए उसे उस समय के ठोस वैज्ञानिक तथा विश्वसनीय प्रमाणों को आधार मानकर घटनाओं की सत्यता ज्ञात करनी होती है। अतीत की घटनाओं की सत्यता की जॉच वह उन प्रतीकों तथा चिन्हों के आधार पर करता है, जो अतीत के द्वारा शेष छोड़े गये हैं। इन चिन्हों तथा प्रतीकों को ही इतिहास में स्रोत कहते हैं।

स्रोत की परिभाषा देते हुए श्री एस० बी० सी० ऐथा (S.B.C Etha) ने लिखा है, "स्रोत अतीत की घटनाओं द्वारा छोड़े गए अवशेष हैं। माना कि इतिहास की घटनायें वास्तविक रूप में घटित होती है, किन्तु वे दीर्घ काल तक अपने वास्तविक स्वरूप में नहीं रह पाती हैं, किन्तु इन घटनाओं के द्वारा छोड़े गये अवशेष चिन्ह ही इन्हें वास्तविकता प्रदान करते हैं। इतिहास इन्हीं अवशेष चिन्हों पर कार्य करते हैं और इन्हीं अवशेष चिन्हों की सहायता से अतीत की घटनाओं का तार्किक तथा क्रमबद्ध ज्ञान प्रस्तुत करते हैं।"

("The sources are the 'traces' left behind by the past events. The events of history are no longer realities, though they once actually happened. traces left by them make them real. A historian works directly upon these traces (i. e. sources) and through them he works upon the events. He reconstructs a systematic and logical account of the past events with the help of the sources.")

स्रोत का वर्गीकरण——वैसे तो इतिहास द्वारा छोड़े गये शेष चिन्ह अनेक प्रकार के होते है। उन सबका वर्गीकरण करना कठिन अवश्य है। फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए हम उन्हें तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं——

1. पुरातात्विक स्रोत।
2. साहित्यिक स्रोत।
3. मौखिक परम्परायें।

इन तीनों ही प्रकार के स्रोतों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है——

1. पुरातात्विक स्रोत (Archaeological Sources)

इस वर्ग के अन्तर्गत हम निम्नलिखित स्रोतों को सम्मिलित करते हैं——

(अ) स्मारक सम्बन्धी स्रोत (Monumental Sources)——इतिहास द्वारा छोड़े गये प्राचीन भवन, खण्डहर, बर्तन, मूर्तियाँ, सिक्के आदि को सम्मिलित करते हैं। भारत में नदी–घाटी सभ्यता का अध्ययन प्रमुख रूप से इसी स्रोत द्वारा किया जा रहा है।

(ब) अभिलेख सम्बन्धी स्रोत (Epigraphic Sources)——प्राचीन समय में चट्टानों, पत्थरों, भवनों, दीवारों तथा शिलालेखों पर लिखे हुए लेख भी अतीत की घटनाओं का अध्ययन करने के ठोस प्रमाण हैं। स्तम्भ तथा ताम्रपत्र इत्यादि इसी वर्ग में आते है।

(स) मुद्रा सम्बन्धी स्रोत (Numismaitic Sources)——प्राचीन समय के सिक्के उस युग की विशेषताओं का ज्ञान कराते हैं। मुद्राओं से उस समय में धातु प्रचलन, लिपियों तथा प्रतीक चिन्हों तथा काल इत्यादि की अच्छी जानकारी होती है।

2. साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

इस वर्ग के अन्तर्गत हम निम्नलिखित स्रोतों का अध्ययन करते हैं——

(अ) धार्मिक साहित्य (Religious Literature)——इस प्रकार के साहित्य के अन्तर्गत हम धार्मिक ग्रन्थों को सम्मिलित करते हैं। ये ग्रन्थ इस समय की धार्मिक स्थिति, धार्मिक मान्यताओं तथा धार्मिक विधियों के अलावा लोगों की आस्था, रहन–सहन, जीवन–दर्शन, जीवन–शैली का तो अध्ययन करते ही है, साथ ही ये धर्म ग्रन्थ तत्कालीन राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन पर भी महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। रामायण, रामचरित मानस तथा महाभारत इसके उदाहरण हैं।

(ब) लौकिक साहित्य (Secular Literature)—प्राचीन समय का ऐसा साहित्य किसी धर्म से सम्बन्धित नहीं है, लौकिक या धर्म–निरपेक्ष साहित्य कहलाता है। इस प्रकार साहित्य को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं :—

(i) निजी साहित्य (Private Literature) —यह वह साहित्य है, जिसकी रचना किसी व्यक्ति विशेष लेखक या कवि के रूप में की है; जैसे—कालिदास की शकुन्तला, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, पाणिनी का अष्टाध्यायी, बाबर का बाबरनामा, अबुल फज़ल का अकबरनामा इत्यादि रचनायें आती हैं।

(ii) सार्वजनिक साहित्य (Public Literature)—सार्वजनिक साहित्य में अतीत में राजा, महाराजाओं या उनके अधिकारियो द्वारा जारी किये गये फरमान, आदेश, सनद, लिपियाँ, पत्र तथा न्यायालय के निर्णय आदि को सम्मिलित करते हैं।

(स) विदेशी प्रमाण (Foreign Testimony)—इस वर्ग के अन्तर्गत हम विदेशी यात्रियों, इतिहासवेत्ताओं, अनुसन्धानकर्त्ताओं आदि के द्वारा प्रस्तुत विवरण आदि को सम्मिलित करते हैं। इस सम्बन्ध में अलबरूनी, ह्वेनसांग, फाहियान, मैगस्थनीज तथा पेट्रोकिल्स के नाम विशेष रूप से लिये जा सकते है, जिन्होंने भारतीय इतिहास का पर्याप्त विवरण दिया है।

3 मौखिक परम्परायें (Oral Traditions)

मौखिक परम्परायें भी इतिहास की अच्छी जानकारी देती हैं। कर्नल टाड द्वारा लिखित 'राजस्थान का इतिहास' मुख्यतः मौखिक परम्पराओं पर आधारित है। ऐतिहासिक महत्त्व की अनेक बातें या परम्पराये बन जाती हैं या लोक–कहानियों तथा रीति–रिवाजों का अंग बन जाती हैं। ये कम से कम स्थानीय इतिहास की जानकारी के तो बड़े ही उपयोगी स्रोत हैं।

कुछ विद्वानों ने स्रोतों को दूसरे प्रकार से वर्गीकृत किया है। इनके अनुसार स्रोत दो प्रकार के होते हैं :—

(1) मौलिक स्रोत (Primary Source)

(2) सहायक स्रोत (Secondary Sources)।

भवन, सिक्के, नगर–योजनायें, स्मारक, अवशेष, मूलरूप में आज्ञा–पत्र, फरमान, चित्रादि सभी मौखिक स्रोत हैं, किन्तु ग्रन्थ, कहानियाँ, विवरण, जीवन–चरित्र आदि सभी सहायक या गौण स्रोत की श्रेणी में आते हैं।

वस्तु अथवा अभिव्यक्ति के रूप में हो सकती है। जैसे—स्मारक, मूर्तियाँ, खण्डहर, अस्त्र-शस्त्र, वस्त्र, सिक्के, शिलालेख, मूल हस्तलिपियाँ, यन्त्र आदि। यह सामग्री विभिन्न स्थानों तथा संग्रहालयों के भ्रमण द्वारा प्राप्त हो सकती है।

2. गौण स्रोत (Secondary sources)—इसके अन्तर्गत आर्थिक घटनाओं से सम्बन्धित अप्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध सामग्री आती है। जैसे—पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें, जीवन-चरित्र, आत्म कथाएँ, प्रतिवेदन, डायरी, व्यापारिक पत्र, सरकारी प्रतिवेदन, भाषण आदि।

स्रोत विधि के गुण (Merits of Source Method)—स्रोत विधि के गुण निम्नलिखित प्रकार हैं—

(1) इस विधि के प्रयोग से छात्रों को स्वयं करके सीखने का अवसर प्राप्त होता है।

(2) यह विधि छात्रों को वास्तविकता की खोज कराने का अवसर प्रदान करती है।

(3) यह विधि छात्रों के ज्ञान भण्डार में सहायक होती है।

स्रोत विधि के दोष (Demerits of Source Method)—स्रोत विधि में विद्वानों ने कुछ दोष बताये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं—

(1) इस विधि से शिक्षण करने में समय अधिक लगता है।

(2) इस विधि से खोजे गये स्रोत पूर्ण रूप से सत्य हैं ? यह कहना कठिन है।

सीमायें (Limitations)

इस विधि के निम्नलिखित सीमाएँ हैं–

1. यद्यपि अंग्रेजी इतिहास के स्रोतों की व्याख्या करने वाली अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं परन्तु भारतीय इतिहास के सूत्रों की व्याख्या करने वाली पुस्तकों का सर्वथा अभाव है।

2. इस विधि के विस्तृत एवं विशद् होने के कारण पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है परन्तु समय तालिका में इतिहास विषय के लिए बहुत कम समय निर्धारित रहता है।

3. यह विधि लघु कक्षाओं के लिए पूर्णत: अनुपयुक्त है। इन्हें सूत्रों को समझने में कठिनाई होती है। उच्च कक्षाओं में भी इनका प्रयोग संदेहास्पद है।

4. चूँकि यह विधि बहुत ही कठिन, जटिल एवं यन्त्रवत है अतएव सुयोग्य, प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता होती है। भारत में ऐसे अध्यापकों का अभाव है।

सुझाव (Suggestions)

इस विधि के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं–

1. इतिहास शिक्षक को इस बात का पूर्णत: ध्यान रखना चाहिए कि वह सामान्य पुस्तकों की अपेक्षा स्रोतों से सम्पन्न पाठ्य-पुस्तकों का ही प्रयोग करे।

2. इतिहास शिक्षक का यह दायित्व है कि वह मौखिक पाठ के समाप्त हो जाने पर छात्रों को पुस्तकालय में स्रोतों के अध्ययन के लिए उत्प्रेरित करे।

3. पुस्तकालय में अध्ययन समाप्त हो जाने के पश्चात् अध्यापक छात्रों को एक निश्चित स्थान पर एकत्रित करके सूत्रों के सम्बन्ध में उनसे विचार-विमर्श करे।

4. विचार-विमर्श हो जाने के पश्चात् अध्यापक छात्रों से सूत्रों से सम्बन्धित लेख लिखवायें और उन्हें कभी-कभी गृह कार्य दें। इससे छात्रों को सूत्रों के प्रयोग का अभ्यास होगा।

5. अध्यापक इनका प्रयोग स्वाभाविक रूप से करे। वह अनावश्यक रूप से इस विधि के माध्यम से छात्रों को शोधकर्ता बनाने का प्रयास न करे।